हफ़्तावार रिसाला : 480
Weekly Booklet : 480



अमीरे अहले सुन्नत की किताब "आ़शिक़ाने रसूल की 130 ह़िकायात" से एक क़िस्त

ह़ैवानात व जिन्नात के वाक़िआ़त

(सफ़ह़ातः 16)

चमकीला सांप 02
बाग़ के जिन्नात 06
त़वाफ़े काबा करने वाला ऊंट 13
कबूतरों की आस्तानए महबूब से महब्बत 16

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दावते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल
मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى خَاتَمِ النَّبِيّٖنَ ط

اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

ह़ैवानात व जिन्नात के वाक़िआ़त[1]

दुआ़ए अ़त्तार : या अल्लाह पाक ! जो कोई 16 सफ़ह़ात का रिसाला "ह़ैवानात व जिन्नात के वाक़िआ़त" पढ़ या सुन ले उस की मूज़ी जानवरों और शरीर जिन्नात से ह़िफ़ाज़त फ़रमा और उस को मां बाप समेत बे ह़िसाब बख़्श दे। اٰمِيْن بِجَاهِ خَاتَمِ النَّبِيّٖن صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه से रिवायत है कि बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم एक मरतबा बाहर तशरीफ़ लाए तो मैं भी पीछे हो लिया। हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم एक बाग़ में दाख़िल हुए और सज्दे में तशरीफ़ ले गए। सज्दे को इतना त़वील कर दिया कि मुझे अन्देशा हुवा कहीं अल्लाह पाक ने रूह़े मुबारका क़ब्ज़ न फ़रमा ली हो। चुनान्चे मैं क़रीब हो कर बग़ौर देखने लगा। जब सरे अक़्दस उठाया तो फ़रमाया : "ऐ अ़ब्दुर्रह़मान ! क्या हुवा ?" मैं ने अपना ख़दशा ज़ाहिर कर दिया तो फ़रमाया : जिब्रईले अमीन (عَلَيْهِ السَّلَام) ने मुझ से कहा : "क्या आप को येह बात ख़ुश नहीं करती कि अल्लाह पाक फ़रमाता है कि जो तुम पर दुरूदे पाक पढ़ेगा मैं उस पर रह़मत नाज़िल फ़रमाऊंगा और जो तुम पर सलाम भेजेगा मैं उस पर सलामती उतारूंगा।" (مسند امام احمد، 1/406، حدیث:11662)

ज़माने वाले सताएं, दुरूदे पाक पढ़ो जहां के ग़म जो रुलाएं, दुरूदे पाक पढ़ो

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

1... येह मज़्मून अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की किताब "आ़शिक़ाने रसूल की 130 ह़िकायात" के सफ़ह़ा 166 ता 184 से लिया गया है।

काबए मुशर्रफ़ा का त़वाफ़ करने वाली जिन्न औ़रतें

मश्हूर सह़ाबी ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ फ़रमाते हैं कि एक रात चन्द औ़रतों को त़वाफ़े काबा करता देख कर मैं वर्त़ए ह़ैरत में डूब गया ! (क्यूंकि वोह आ़म औ़रतों की त़रह़ नहीं थीं) जब वोह फ़ारिग़ हुईं तो बाहर निकल गईं। मैं उन के तआ़क़ुब में रवाना हुवा, वोह चलती रहीं यहां तक कि वोह एक वीरान जंगल में दाख़िल हो गईं, वहां कुछ मुअ़म्मर (यानी बड़ी उ़म्र के) अफ़राद बैठे थे, उन्हों ने मुझ से पूछा : "ऐ इब्ने ज़ुबैर ! आप यहां कैसे आ गए ?" मैं ने जवाब देने के बजाए उन से सुवाल कर दिया : "आप लोग कौन हैं ?" उन्हों ने कहा : "हम जिन्नात हैं।" मैं ने अपने तआ़क़ुब और इस का सबब बयान किया, उन्हों ने कहा : "येह हमारी औ़रतें (यानी जिन्नियां) हैं। ऐ इब्ने ज़ुबैर ! आप खाने में क्या पसन्द फ़रमाएंगे ?" मैं ने कहा : "ताज़ा पक्की खजूरें।" ह़ालांकि उस वक़्त मक्कए मुकर्रमा में ताज़ा खजूर का कहीं नामो निशान न था। लेकिन वोह मेरे पास पक्की ताज़ा खजूरें ले आए। जब मैं खा चुका तो कहा : "जो बच गई हैं उन्हें साथ ले जाइए।" ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने वोह बची हुई खजूरें उठाईं और घर वापस आ गया। (لقط المرجان فی احکام الجان، ص247)

अल्लाह पाक की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

ग़मे ह़यात अभी राह़तों में ढल जाएं तेरी अ़त़ा का इशारा जो हो गया या रब

(वसाइले बख़्शिश, स. 96)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

चमकीला सांप

ह़ज़रते अ़त़ा बिन अबी रबाह़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا मस्जिदे ह़राम में मौजूद थे कि एक सफ़ेद और

सियाह रंग का चमकीला सांप आया, उस ने बैतुल्लाह शरीफ़ का त़वाफ़ किया फिर वोह "मक़ामे इब्राहीम" के पास आया और गोया नमाज़ अदा कर रहा था तो ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अम्र رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا उस के पास आ कर खड़े हो गए और फ़रमाया : "ऐ सांप ! शायद तुम ने उ़मरे के अरकान पूरे कर लिए हैं और अब मैं तुम्हारे बारे में यहां के ना समझ लोगों से डरता हूं (यानी कहीं वोह तुम्हें अस्ली सांप समझ कर मार न डालें लिहाज़ा तुम यहां से जल्दी चले जाओ) ।" चुनान्चे वोह घूमा और आस्मान की त़रफ़ उड़ गया । (لقط المرجان فی احکام الجان، ص101)

अल्लाह पाक की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो । اٰمِیۡن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

कर दे ह़ज का शरफ़ अ़त़ा या रब सब्ज़ गुम्बद भी दे दिखा या रब
येह तेरी ही तो है इ़नायत कि मुझ को मक्के बुला लिया या रब

(वसाइले बख़्शिश, स. 87)

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

सांप नुमा जिन्न ने ह़जरे अस्वद चूमा

ह़ज़रते अबू ज़ुबैर رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन सफ़्वान رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ बैतुल्लाह शरीफ़ के क़रीब बैठे थे कि "इ़राक़ी दरवाज़े" से अचानक एक सांप दाख़िल हुवा और ख़ानए काबा का त़वाफ़ किया फिर ह़जरे अस्वद के पास आया और उसे चूमा । ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन सफ़्वान رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ ने उस से फ़रमाया : "ऐ जिन्न ! अब आप ने अपना उ़मरह अदा कर लिया है, हमारे बच्चे ख़ौफ़ज़दा हैं लिहाज़ा आप वापस चले जाइए ।" चुनान्चे वोह जिस त़रफ़ से आया था उसी त़रफ़ से वापस चला गया । (لقط المرجان فی احکام الجان، ص100)

अल्लाह पाक की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

शरफ़ दे ह़ज का मुझे बहरे मुस्त़फ़ा या रब रवाना सूए मदीना हो क़ाफ़िला या रब

(वसाइले बख़्शिश, स. 94)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

पानी की त़रफ़ रहनुमाई करने वाला जिन्न

मुसलमानों के तीसरे ख़लीफ़ा, ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के दौरे ख़िलाफ़त में आ़शिक़ाने रसूल का एक क़ाफ़िला ह़ज के इरादे से निकला, उन्हें रास्ते में प्यास लगी, एक कुंवां नज़र आया मगर उस का पानी खारा था। लिहाज़ा वोह आगे बढ़ गए, ह़त्ता कि शाम हो गई लेकिन पानी न मिला। क़ाफ़िला रात भर चलता रहा यहां तक कि एक खजूर के दरख़्त के पास पहुंचा, यकायक एक सियाह फ़ाम मोटा आदमी नुमूदार हुवा, उस ने कहा : ऐ क़ाफ़िले वालो ! मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते सुना है : "जो शख़्स अल्लाह पाक और क़ियामत के दिन पर ईमान रखता है उसे चाहिए कि वोह मुसलमान भाइयों के लिए वोही पसन्द करे जो अपने लिए पसन्द करता है और मुसलमान भाइयों के लिए वोह चीज़ नापसन्द करे जो अपने लिए नापसन्द करता है।" तुम लोग यहां से आगे बढ़ो, एक टीला आएगा फिर अपनी दाईं जानिब मुड़ जाना वहां तुम्हें पानी मिल जाएगा। उन में से किसी ने कहा कि अल्लाह की क़सम ! मेरे ख़याल में येह शैत़ान है, दूसरे शख़्स ने तरदीद करते हुए कहा : "शैत़ान इस क़िस्म की बातें नहीं करता, येह कोई मुसलमान जिन्न है।" बहरह़ाल वोह लोग चल पड़े और उस जिन्न की निशानदही के मुत़ाबिक़ पानी तक पहुंच गए। (لقط المرجان فی احکام الجان، ص109 ملخّصاً)

किसी के हाथ ने मुझ को सहारा दे दिया वरना कहां मैं और कहां येह रास्ते पेचीदा पेचीदा

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

ग़ौसे आज़म رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के क़ाफ़िलए ह़ज का पुर असरार जवान

शहंशाहे बग़दाद, हुज़ूरे ग़ौसे पाक ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه एक बार अपने मुरीदीन का क़ाफ़िला लिए ह़ज के लिए रवाना हुए, जब येह क़ाफ़िला किसी मन्ज़िल पर उतरता तो सफ़ेद कपड़े में मल्बूस एक पुर असरार जवान कहीं से आ जाता, वोह उन के साथ खाता पीता नहीं था। हुज़ूर ग़ौसे आज़म رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने अपने मुरीदों को वसिय्यत (यानी ताकीद) फ़रमाई थी कि वोह इस "जवान" से बातचीत न करें। क़ाफ़िला मक्कए मुकर्रमा में दाख़िल हुवा और एक घर में क़ियाम पज़ीर हो गया। जब येह हुज्जाजे किराम घर से निकलते तो वोह पुर असरार जवान घर के अन्दर दाख़िल हो जाता और जब येह दाख़िल होते तो वोह बाहर निकल जाता। एक मरतबा सब लोग निकल गए लेकिन क़ाफ़िले के एक ह़ाजी साह़िब बैतुल ख़ला (wash room) में रह गए, इसी दौरान वोह पुर असरार जवान घर में दाख़िल हुवा तो उसे कोई नज़र नहीं आया। उस ने थैली खोली और एक गद्दर (यानी अध पक्की खजूर) निकाल कर खाने लगा। जब वोह ह़ाजी साह़िब बैतुल ख़ला से निकले और उन की नज़र उस पुर असरार जवान पर पड़ी तो वोह वहां से चला गया। इस के बाद फिर कभी क़ाफ़िले वालों के पास नहीं आया। जब उन ह़ाजी साह़िब ने सरकारे ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه को इस ह़ैरत अंगेज़ बात की ख़बर दी तो फ़रमाया : येह पुर असरार जवान उन जिन्नों में से है जिन्हों ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से क़ुरआने मजीद सुना है। (لقط المرجان، ص239)

अल्लाह पाक की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمِيْن بِجَاهِ خَاتَمِ النَّبِيّٖن صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

जिन्नो इन्सानो मलक को है भरोसा तेरा सरवरा मर्जए कुल है दरे वाला तेरा

(ज़ौक़े नात, स. 23)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

बाग़ के जिन्नात

ह़ज़रते अबू इस्ह़ाक़ इब्राहीम ख़व्वास رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : हमारा क़ाफ़िला सूए ह़रम रवां दवां था, किसी सबब से मैं क़ाफ़िले से अलग हो गया और मुसल्सल तीन शबाना रोज़ चलता रहा, इस दौरान मुझे न भूक लगी न प्यास, न ही कोई ह़ाजत पेश आई। आख़िरेकार मैं एक हरे भरे लहलहाते गुल्शन में जा निकला, वहां ख़ूब फलदार दरख़्त थे, हर त़रफ़ ख़ुश्बूदार फूल खिले थे और बीच में एक छोटा सा तालाब था। मैं ने अपने दिल में कहा : येह तो गोया जन्नत है। अचानक ख़ुश पोश बा इ़मामा अफ़राद का एक गिरोह आ गया, उन्हों ने मुझे सलाम किया, मैं ने जवाब दिया, मेरे दिल में ख़याल गुज़रा। हो न हो येह जिन्नात हैं कि येह सरज़मीन ही अ़जीबो ग़रीब है। इतने में उन में से एक शख़्स बोला : "हम क़ौमे जिन्नात में से हैं, हमारा एक मस्अले में बाहम इख़्तिलाफ़ हो गया है। हम ने लैलतुल जिन्न में अल्लाह पाक का मुक़द्दस कलाम बज़बाने शाहे ख़ैरुल अनाम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सुनने का शरफ़ ह़ासिल किया है और उसी पाक कलाम की वजह से तमाम दुनियवी काम हम से ले लिए गए और अल्लाह पाक की मशिय्यत (मर्ज़ी) से इस जंगल में येह तालाब हमारा मक़ाम बना दिया गया है। मैं ने दरयाफ़्त किया कि मैं ने अपना ह़ज का क़ाफ़िला जहां छोड़ा है, वोह जगह यहां से कितनी दूर है ? येह सुन कर उन में से एक मुस्कुराया और कहने लगा : "ऐ अबू इस्ह़ाक़ ! अल्लाह पाक ही के लिए असरार व अ़जाइबात हैं, जहां इस वक़्त आप हैं, एक जवान के सिवा आज तक कोई नहीं आया और वोह भी यहीं वफ़ात पा गया," येह कह कर उस ने एक त़रफ़ इशारा कर के बताया : "वोह रहा इस का

मज़ार।" वोह मज़ार तालाब के कनारे था और उस के इर्द गिर्द ऐसे ख़ुशनुमा व ख़ुश्बूदार फूल खिले हुए थे जो इस से पहले मैं ने कभी न देखे थे। बात जारी रखते हुए उस जिन्न ने कहा : "आप के और क़ाफ़िले के दरमियान इतने इतने महीने की मसाफ़त (यानी फ़ासिला) है।" ह़ज़रते अबू इस्ह़ाक़ इब्राहीम ख़व्वास رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : "मैं ने उन जिन्नात से कहा : "मुझे उस मर्ह़ूम जवान के बारे में कुछ बताइए।" तो एक ने कहा : हम यहां तालाब के कनारे बैठे हुए "मह़ब्बत" का तज़्किरा कर रहे थे, हमारी गुफ़्तगू जारी थी कि अचानक एक जवान हमारे पास आया और उस ने सलाम किया। हम ने सलाम का जवाब दिया और उस से दरयाफ़्त किया : "ऐ जवान ! तुम कहां से आए हो ?" बोला : नैशापूर के एक शहर से।" हम ने पूछा : "तुम वहां से कब निकले थे ?" उस ने जवाब दिया : "सात दिन क़ब्ल। हम ने पूछा : "अपने वत़न से निकलने की वजह ?" कहा : "अल्लाह पाक का येह फ़रमान :

وَ اَنِیْبُوْۤا اِلٰى رَبِّكُمْ وَ اَسْلِمُوْا لَهٗ مِنْ قَبْلِ اَنْ یَّاْتِیَكُمُ الْعَذَابُ ثُمَّ لَا تُنْصَرُوْنَ ﴿۵۴﴾

(پ24، الزمر:54)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और अपने रब की त़रफ़ रुजूअ लाओ और उस के ह़ुज़ूर गर्दन रखो क़ब्ल इस के कि तुम पर अ़ज़ाब आए फिर तुम्हारी मदद न हो।

हम ने उस से कुछ और भी सुवालात किए जिन के जवाबात देते देते उस ने यकायक एक ज़ोरदार चीख़ मारी और उस की रूह़ क़फ़से उ़न्सुरी से परवाज़ कर गई। हम ने उसे यहां दफ़्न कर दिया और येह उस का मज़ार है (अल्लाह इस से राज़ी हो) ह़ज़रते इब्राहीम ख़व्वास رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं मर्ह़ूम जवान के औसाफ़ सुन कर बहुत मुतअस्सिर हुवा और अ़क़ीदत से मैं मज़ार शरीफ़ के क़रीब गया तो उस के सिरहाने नरगिस के फूलों का एक बहुत बड़ा गुलदस्ता रखा था और

येह इबारत लिखी हुई थी "هٰذَا قَبْرُ حَبِيْبِ اللّٰهِ قَتِيْلِ الْغَيْرَةِ" यानी येह अल्लाह पाक के दोस्त की क़ब्र है उसे "ग़ैरत" ने क़त्ल किया है। और एक वरक़ पर "اَلْاِنَابَةُ" का माना लिखा था। फिर जिन्नात ने मुझ से उस आयत की तफ़्सीर पूछी तो मैं ने बयान कर दी। वोह बहुत ख़ुश हुए और उन का आपसी इख़्तिलाफ़ व इज़्तिराब जाता रहा और कहने लगे : हमें हमारे मस्अले का काफ़ी व शाफ़ी जवाब मिल गया। हज़रते इब्राहीम ख़व्वास رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : फिर मुझे नींद आ गई, जब बेदार हुवा तो (मक्कए मुकर्रमा) में तन्ईम के मक़ाम पर हज़रते आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا की मस्जिद के पास अपने आप को पाया और मेरे पास एक "फूलों का गुलदस्ता" मौजूद था जो साल भर तरो ताज़ा रहा फिर कुछ अर्से बाद वोह ख़ुद बख़ुद ग़ाइब हो गया। (لقط المرجان، ص240 ملخصًا)

अल्लाह पाक की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمِيْن بِجَاهِ خَاتَمِ النَّبِيّٖن صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

तमन्ना है दरख़्तों पर तेरे रौज़े के जा बैठे क़फ़स जिस वक़्त टूटे ताइरे रूह मुक़य्यद का

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

अजीबो ग़रीब छोटा सा परिन्दा

हज़रते वहब और हज़रते हसन बसरी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْهِمَا की हर साल हज के मौसमे बहार में मस्जिदे ख़ैफ़ शरीफ़ के अन्दर मुलाक़ात हुवा करती थी। एक शब जब कि भीड़ छट चुकी थी और अक्सर हुज्जाजे किराम सो चुके थे, अलबत्ता बाज़ हुज्जाजे किराम उन दोनों हज़रात के साथ दीनी गुफ़्तगू कर रहे थे, यकायक एक अजीबो ग़रीब छोटा सा परिन्दा आया और हज़रते वहब رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه की एक जानिब हल्क़े में बैठ गया और सलाम किया, हज़रते वहब رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه ने उस के सलाम का जवाब दिया और पूछा : तुम कौन हो ? उस ने जवाब दिया : मैं एक

मुसलमान जिन्न हूं। पूछा : कहिए कैसे आना हुवा ? बोला : "क्या आप येह पसन्द नहीं फ़रमाते कि हम आप की मजलिस में बैठें और इ़ल्म हासिल करें !" हमारे अन्दर आप से रिवायात बयान करने वाले बहुत से जिन्नात हैं, हम आप ह़ज़रात के साथ बहुत से कामों में शरीक होते हैं मसलन नमाज़, बीमारों की इ़यादत, नमाज़े जनाज़ा और ह़ज व उ़मरह वग़ैरा नीज़ आप से इ़ल्म ह़ासिल करते और क़ुरआने करीम की तिलावत सुनते हैं। (کتاب الہواتف لابن ابی الدنیا، 2/526، رقم:177)

अल्लाह पाक की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

आ़लमे वज्द में रक़्सां मेरा पर पर होता काश ! मैं गुम्बदे ख़ज़रा का कबूतर होता

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

हैवानात के 9 वाक़िआत

दरिन्दा भी ताबेअ़ हो गया

ह़ज़रते सुफ़्यान सौरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ और ह़ज़रते शैबान राई़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ दोनों ह़ज के इरादे से निकले तो उन के सामने एक दरिन्दा आ गया। ह़ज़रते सुफ़्यान सौरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ ने ह़ज़रते शैबान राई़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ से फ़रमाया : "क्या आप इस दरिन्दे को नहीं देख रहे ?" तो उन्हों ने फ़रमाया : "डरिए मत।" फिर ह़ज़रते शैबान राई़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ ने उस का कान पकड़ कर दबाया तो वोह दुम हिलाने लगा, आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ ने उस की दुम पकड़ ली, इस पर सुफ़्यान सौरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ ने फ़रमाया : क्या येह "शोहरत" नहीं ? तो उन्हों ने जवाब दिया : "अगर मुझे शोहरत का ख़ौफ़ न होता तो मैं अपना ज़ादे राह इस की पीठ पर लाद कर मक्कए मुकर्रमा ले जाता।" (الروض الفائق، ص103)

अल्लाह पाक की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

शेर का ख़तरा क्या शेर ख़ुद कांप उठा सामने जब नबी का ग़ुलाम आ गया

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

"क्या येह शोहरत नहीं ?" की वज़ाह़त

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! سُبْحٰنَ اللّٰہ दरिन्दे भी अल्लाह वालों के ताबेअ़ हो जाते हैं। इस वाक़िए़ में मश्हूर ताबेई़ बुज़ुर्ग ज़बरदस्त आ़लिम व मुह़द्दिस सुफ़्यान सौरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ का सुवाल करना लोगों को ह़ज़रते शैबान राई़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ के बारे में हुब्बे जाह के तअ़ल्लुक़ से बद गुमानी से बचाने के लिए था और इस सुवाल का उन्हों ने भी क्या ख़ूब जवाब इरशाद फ़रमाया। बहरह़ाल येह बड़ों की बातें हैं येह ह़ज़रात इख़्लास के पैकर हुवा करते थे और एक दूसरे की बात़िनी इस्लाह़ का ख़याल रखा करते थे।

शेर ने रास्ता बताया

ह़ज़रते सफ़ीना رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ रूम की सरज़मीन में इस्लामी लश्कर से बिछड़ गए और लश्कर की तलाश में दौड़ते हुए चले जा रहे थे कि अचानक जंगल से एक शेर निकल कर उन के सामने आ गया, आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने बुलन्द आवाज़ से फ़रमाया : "یَا اَبَا الْحَارِثِ! اَنَا مَوْلٰی رَسُوْلِ اللّٰہ" ऐ अबुल ह़ारिस ! (येह शेर की कुन्यत है) मैं रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का ग़ुलाम हूं और मेरा मुआ़मला येह है कि मैं लश्करे इस्लाम से अलग पड़ गया हूं और लश्कर की तलाश में हूं। येह सुन कर शेर दुम हिलाता हुवा उन के पहलू में आ कर खड़ा हो गया और बराबर उन को अपने साथ में लिए हुए चलता रहा यहां तक कि येह लश्करे इस्लाम में पहुंच गए तो शेर वापस चला गया। (مشکاۃ، 2/400، حدیث:5949)

शेर का ख़तरा क्या शेर ख़ुद कांप उठा ! सामने जब नबी का ग़ुलाम आ गया

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

क़ुरआने करीम की ताज़ीम करने वाले बन्दर का वाक़िआ

मक्तबतुल मदीना की 561 सफ़हात की किताब "मल्फ़ूज़ाते आला ह़ज़रत" 477 ता 478 पर मेरे आक़ा आला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का इरशाद है : एक मरतबा नन्हे मियां (यानी सरकारे आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के सब से छोटे भाई अ़ल्लामा मुह़म्मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه) अपनी छत पर क़ुरआने अ़ज़ीम पढ़ रहे थे, सामने दीवार पर एक बन्दर बैठा था, येह किसी काम को उठ कर गए, बन्दर दौड़ता हुवा सामने दीवार पर गुज़रा और उस पार जाना चाहता था जैसे ही क़ुरआने अ़ज़ीम के मुह़ाज़ात पर (यानी सामने) आया, क़ुरआने अ़ज़ीम को सज्दा किया और अपनी राह चला गया।

चांद शक़ हो पेड़ बोलें जानवर सज्दे करें बारकल्लाह मर्जए़ आ़लम येही सरकार है

(ह़दाइक़े बख़्शिश,स. 176)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

बारगाहे रिसालत में इस्तिग़ासा

एक ह़ाजी साह़िब मदीनए मुनव्वरा में ह़ाज़िर हुए जिस मकान में मुक़ीम हुए वहां एक बिल्ली रहती थी जो रोज़ाना उन के क़रीब आती और वोह उस से प्यार करते, ह़ाजी साह़िब के मन में मदीने की बिल्ली ख़ूब समा गई थी और उन्हों ने उसे अपने मुल्क ले जाने की निय्यत कर ली थी। बतमाम ह़िफ़ाज़त ले जाने के लिए उन्हों ने एक पिंजरे की भी तरकीब बना ली थी, जब ह़िजरे मदीना की जां

सोज़ घड़ियां क़रीब आईं, और मदीने की आख़िरी रात आ गई तो ह़ाजी साह़िब ने बारगाहे रिसालत में अलवदाई़ सलाम पेश किया और घर आ कर लेट गए। ख़्वाब में जनाबे रिसालते मआब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने करम फ़रमाया, लबहाए मुबारका को जुम्बिश हुई, रह़मत के फूल झड़ने लगे, अल्फ़ाज़ कुछ यूं तरतीब पाए : "आप ख़ैरियत से रुख़्सत होंगे मगर मेरी बिल्ली को साथ न ले जाना, येह कई दिन से रोज़ाना मेरे दरबार में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ करती है : मुझे बचा लीजिए ! मदीना छूट रहा है।" (मदीनतुर्रसूल,स. 419 मुलख़्ख़सन)

सबबे वुफ़ूरे रह़मत मेरी बे ज़बानियां हैं
न फ़ुग़ां के ढंग जानूं न मुझे पुकार आए

(ज़ौक़े नात, स. 242)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

हिरनी की पुकार ब हुज़ूर शहंशाहे अबरार

तमाम मुसलमानों की प्यारी प्यारी अम्मीजान ह़ज़रते उम्मे सलमा رَضِیَ اللهُ عَنْهَا से रिवायत है कि सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सह़रा में थे। अचानक किसी ने पुकारा : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुतवज्जेह हो कर देखा मगर कोई नज़र न आया। फिर दूसरी त़रफ़ मुतवज्जेह हो कर देखा तो बन्धी हुई एक हिरनी नज़र आई उस ने अ़र्ज़ की : اُدْنُ مِنِّیْ یَا رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! यानी या रसूलल्लाह ! मेरे क़रीब तशरीफ़ लाइए। अल्लाह पाक के ह़बीब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने क़रीब तशरीफ़ ला कर फ़रमाया : مَاحَاجَتُكِ؟ यानी तेरी क्या ह़ाजत है ? हिरनी बोली : उस पहाड़ में मेरे दो बच्चे हैं, आप मुझे खोल दीजिए, मैं उन दोनों को दूध पिला कर आप की

ख़िदमत में हाज़िर हो जाऊंगी। फ़रमाया : क्या तू ऐसा करेगी ? हिरनी ने अ़र्ज़ की : अगर मैं ऐसा न करूं तो अल्लाह पाक मुझे इ़शार का अ़ज़ाब दे। (इ़शार ऐसी हामिली ऊंटनी को कहते हैं जिस का दस माह गुज़र जाने के बाद भी बच्चा बाहर न आए, और उस बेचारी पर बोझ लादा जाए जिस के सबब वोह तक्लीफ़ से ख़ूब बिलबिलाए, चीख़े चिल्लाए) तो ख़ातमुल मुर्सलीन صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उसे खोल दिया और उस ने जा कर अपने बच्चों को दूध पिलाया और इस के बाद वोह आ गई और हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उसे बांध दिया। इतने में आराबी बेदार हो गया और उस ने देख कर अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आप को कोई काम है ? फ़रमाया : हां इस हिरनी को छोड़ दे। उस ने उसे छोड़ दिया। वोह चौकड़ियां भरती हुई जा रही थी और येह कह रही थी : اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَاَنَّكَ رَسُوْلُ اللهِ (मैं गवाही देती हूं कि अल्लाह के सिवा कोई इ़बादत के लाइक़ नहीं और बेशक आप अल्लाह के रसूल हैं)। (معجم کبیر، 23/331، حدیث 763، الخصائص الکبریٰ، 2/101)

हां यहीं करती हैं चिड़ियां फ़रियाद　　हां यहीं चाहती है हिरनी दाद
इसी दर पर शुतराने नाशाद　　गिलए रंजो अ़ना करते हैं

(हदाइक़े बख़्शिश, स. 113)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب　❀❀❀　صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

ऊंट ने त़वाफ़े काबा किया और फिर_ _ _

815 हि. का वाक़िआ़ है, एक ऊंट अपने मालिक से ख़ुद को छुड़ा कर भाग खड़ा हुवा, यहां तक कि मक्कए मुकर्रमा पहुंचा और सीधा मस्जिदुल ह़राम में दाख़िल हो गया, लोग पकड़ने दौड़े मगर किसी के हाथ में न आया, उस ने काबए मुशर्रफ़ा के गिर्द सात चक्कर लगाए फिर ह़जरे अस्वद पर अपने होंट रख

दिए, इस के बाद मीज़ाबे रह़मत के सामने खड़ा हो गया, उस की आंखों से टपटप आंसू गिर रहे थे, इसी त़रह़ रोते रोते वोह ज़मीन पर आ रहा और उस का दम निकल गया। लोगों ने उसे बसद एह़तिराम उठाया और सफ़ा व मर्वा के दरमियान दफ़्ना दिया। (کتاب الحج، ص114 ملخصًا) (उस दौर में आज कल की त़रह़ का मुआ़मला न था वहां तदफ़ीन मुम्किन थी चुनान्चे शाह अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ मुह़द्दिस देहल्वी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने बुस्तानुल मुह़द्दिसीन सफ़ह़ा 298 पर लिखा है : मश्हूर मुह़द्दिस ह़ज़रते इमाम नसाई رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه सफ़ा व मर्वा के दरमियान मदफ़ून हैं)

अल्लाह पाक की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

तसद्दुक़ हो रहे हैं लाखों बन्दे गिर्द फिर फिर कर
त़वाफ़े ख़ानए काबा अ़जब दिलचस्प मन्ज़र है

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ❀❀❀ صَلَّی اللهُ عَلٰی مُحَمَّد

ऊंटों ने आक़ा को सज्दा किया

ग़ैलान बिन सलमा सक़फ़ी رَضِیَ اللهُ عَنْه फ़रमाते हैं : हम एक सफ़र में मदीने के ताजवर صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हमराह थे, हम ने एक अ़जीब बात देखी (और वोह येह कि) हम एक मन्ज़िल में उतरे, वहां एक शख़्स ने ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : या नबिय्यल्लाह ! मेरा एक बाग़ है कि मेरी और मेरे इ़याल की वोही वजहे मआ़श (यानी गुज़र बसर का ज़रीआ़) है इस में मेरे दो शुतर (यानी दो ऊंट) आबकश (कुंवे से पानी खींचने वाले) थे, दोनों मस्त हो गए न अपने पास आने दें न बाग़ में क़दम रखने दें, किसी की त़ाक़त नहीं कि क़रीब जाए। हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मअ़ सह़ाबए किराम (علیہم الرضوان) उठ कर उस के बाग़ को गए। फ़रमाया : खोल

दे, अ़र्ज़ की, या नबिय्यल्लाह ! इन का मुआ़मला इस से सख़्त तर है, फ़रमाया : खोल, दरवाज़े को जुम्बिश (यानी ह़रकत) होनी थी कि दोनों (ऊंट) शोर करते हवा की त़रह़ झपटे दरवाज़ा खुला और उन्हों ने जब हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को देखा फ़ौरन सज्दे में गिर पड़े ! हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन के सर पकड़ कर मालिक के सिपुर्द कर दिए और फ़रमाया : "इन से काम ले और चारा बख़ूबी दे।" ह़ाज़िरीन ने अ़र्ज़ की : या नबिय्यल्लाह ! चौपाए हुज़ूर को सज्दा करते हैं तो हुज़ूर के सबब हम पर अल्लाह की नेमत तो बेहतर है, अल्लाह ने गुमराही से हम को राह दिखाई और हुज़ूर के हाथों पर हमें दुनिया व आख़िरत के मोहलिकों (यानी हलाक करने वाली चीज़ों) से नजात दी, क्या हुज़ूर हम को इजाज़त न देंगे कि हम हुज़ूर को "सज्दा" करें ? नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : सज्दा मेरे लिए नहीं, वोह तो उसी ज़िन्दा के लिए है जो कभी न मरेगा, उम्मत में किसी को सज्दे का हुक्म देता तो औ़रत को सज्दए शौहर का। (دلائل النبوۃ، ص228)

मलक व जिन्नो बशर पढ़ते हैं कलिमा उन का जानवर संगो शजर करते हैं चर्चा उन का

(क़बालए बख़्शिश, स. 57)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

ग़मे मुस्त़फ़ा में जान देने वाले दो बे ज़बान

सुल्ताने दो जहान صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी के सबब इन्सो जान के साथ साथ बे ज़बान ह़ैवान भी सदमे से दोचार हुए ﴿1﴾ एक दराज़गोश (यानी गधा) जिस पर जनाबे मह़बूबे बारी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अक्सर सुवारी फ़रमाया करते थे, फ़र्ते ग़म से बेताब हो कर उस ने एक कुंवें में छलांग लगा कर जान दे दी ﴿2﴾ सरवरे अम्बिया صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़ास ऊंटनी भी दीदारे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बग़ैर बेक़रार रहने लगी, खाना पीना छोड़ दिया और इस त़रह़ उस ने भी भूक प्यास से जान दे दी। (مدارج النبوت، حصہ: 2، ص444)

उन के दर पर मौत आ जाए तो जी जाऊं ह़सन उन के दर से दूर रह कर ज़िन्दगी अच्छी नहीं

(ज़ौक़े नात, स. 187)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

ह़रम शरीफ़ के कबूतरों की आस्तानए मह़बूब से मह़ब्बत

क़ुत्बे मदीना सय्यिदी व मुर्शिदी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना ज़ियाउद्दीन अह़मद मदनी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : एक मरतबा इन्तिज़ामिया ने मस्जिदे नबवी शरीफ़ के ह़रमे अनवर को साफ़ सुथरा रखने के लिए फ़ैसला किया कि ह़रम शरीफ़ में कबूतरों के लिए दाना न डाला जाए, इस त़रह़ कबूतर दाने की तलाश के लिए दूसरी जगहों में मुन्तक़िल हो जाएंगे। इस हुक्म पर अ़मल किया गया और कई दिन तक दाना न डाला गया मगर कबूतरों की गुम्बदे ख़ज़रा से मह़ब्बत का येह आ़लम था कि भूक से मर रहे थे मगर आस्तानए मह़बूब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم छोड़ने के लिए तय्यार नहीं थे। अहले मदीना ने अपनी आंखों से येह इ़श्क़ो मह़ब्बत भरा मन्ज़र देखा, फिर दुनिया में येह बात शोहरत पकड़ गई तो लोगों ने हुकूमत को तार दिए और इसरार किया, तब हुकूमत ने फिर ह़स्बे साबिक़ कबूतरों को दाना डालना शुरूअ़ किया। (अन्वारे क़ुत्बे मदीना,स. 54 मुलख़्ख़सन)

अल्लाह पाक की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمِيْن بِجَاهِ خَاتَمِ النَّبِيّٖن صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

वोह मदीने के प्यारे कबूतर जब नज़र आ तुझ को बिरादर
उन को थोड़े से दाने खिला कर तू सलाम मेरा रो रो के कहना

(वसाइले बख़्शिश,स. 592)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

अगले हफ़्ते का रिसाला



DAWATE ISLAMI INDIA

FGN Channel
Dekhte Rahiye

مکتبۃ المدینہ بند
MAKTABATUL MADINA INDIA

Delhi : 421, Urdu Market, Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-110006 +91-8178862570

Mumbai : 19/20, Mohammad Ali Road, Opp. Mandavi Post Office, Mumbai-400003 +91-9320558372

Ahmedabad : Faizane Madina, Tinkonia Bagicha, Mirzapur, Ahmedabad-380001 +91-9327168200

Nagpur : Opp. Garib Nawaz Masjid, Saifi Nagar Road, Mominpura, Nagpur-440018 +91-9326310099

www.maktabatulmadina.in feedbackmmhind@gmail.com

For Home Delivery of Books Please Contact on (T&C Apply) +91-9978626025